

सामाजिक रचनावाद के परिप्रेक्ष्य में सीखना

(Social Constructivist Perspectives of Learning)

अनुक्रमणिका

- परिचय
- उद्देश्य

4.1. अवधारणा एवं सिद्धान्त – सामाजिक रचनावाद के परिप्रेक्ष्य में

4.1.1. सामाजिक रचनावाद क्या है?

4.1.2. सामाजिक रचनावाद –अवधारणा

4.2. सामाजिक रचनावाद से संबंधित सिद्धान्त

4.2.1. अधिगम उपागम (Learning Approach)

4.2.2. सिद्धान्त

4.3. शैक्षिक निहितार्थ

4.3.1. शिक्षक की भूमिका

4.3.2. अधिगमकर्त्ता की भूमिका.

परिचय:-

औपचारिक रूप से बालक शिक्षा विद्यालय से ग्रहण करता है वह कोरी स्लेट या खाली बर्तन नहीं होता है अपितु उसके पास अनेक तरह का ज्ञान होता है। उसका यह ज्ञान उसे अपने आस-पास के सांस्कृतिक सामाजिक परिवेश से मिलता है। शिक्षक उसके इस पूर्व ज्ञान को और समृद्ध करता है। पूर्व ज्ञान को आधार बनाकर नये ज्ञान का संचार करता है।

मानव अन्य जीवों से श्रेष्ठ या विशेष माना गया है क्योंकि वह समाज में रहता है उसका एक सामाजिक दायरा है, दोस्ती है, रिश्तेदारी है। मानव समाज के बनाये नियम-कानून को मानता है, उसी में पलता-बढ़ता है। यह सामाजिक बंधन उसके संस्कृति का हिस्सा होता है। मानव लगातार दूसरों के साथ समायोजन करता है। शिक्षा का भी मुख्य उद्देश्य बच्चे को सामाजिक प्राणी बनाना है। शिक्षा समाज के माध्यम या सहायता से दी जा सकती है। बच्चों की रुचि, आदत, आचरण, व्यवहार, भाषा, ज्ञान आदि पर उस समाज की छाप होती है, जिसमें वह पलता-बढ़ता है। समाज का अस्तित्व भी शिक्षा पर आधारित है। समाज के आचार-विचार, परंपराएं, संस्कृति, विश्वास, मान्यताएं शिक्षा के द्वारा ही अगली पीढ़ी को सौंपी जाती हैं। अतः आवश्यक है कि, बच्चा समाज में रहकर सामाजिक सरोकार को जानते हुए अपने ज्ञान का सृजन करें।

उद्देश्य:- इस इकाई अध्ययन के बाद छात्राध्यापक जान सकेंगे-

1. सामाजिक रचनावाद की अवधारणा को समझ सकेंगे।
2. सामाजिक रचनावाद के सिद्धांत को समझ सकेंगे।
3. सामाजिक रचनावाद में शिक्षक की भूमिका को समझ सकेंगे।
4. सामाजिक रचनावाद में अधिगमकर्ता की भूमिका को समझ सकेंगे।

4.1. अवधारणा-सामाजिक रचनावाद के परिप्रेक्ष्य में (Concept and Principle of Social Constructivist Perspectives)

सामाजिक रचनावाद समझने के पहले सामाजिक विकास को जानना आवश्यक है। सॉरेन्सन ने इस संदर्भ में कहा है "सामाजिक वृद्धि और विकास से हमारा तात्पर्य अपने साथ और दूसरों के साथ भली-भांति चलने (समायोजित करने) की बढ़ती योग्यता है।"

सामाजिक विकास सीखने की वह प्रक्रिया है जो समूह के स्तर परंपराओं तथा रीति-रिवाजों के अनुकूल अपने आप को ढालना तथा एकता, मेलजोल और सहयोग की भावना भरने में सहायक होती है। "—फ्री मैन एवं शौवल

उपरोक्त परिभाषाएं निम्नलिखित बातों पर जोर देती हैं—

- सामाजिक विकास वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपने समूह विशेष में अपना ठीक प्रकार से समायोजन करने के लिए सभी प्रकार से आवश्यक ज्ञान कौशल और अभिवृत्तियों को अर्जित कर जाता है।
- सामाजिक विकास के फलस्वरूप समूह के प्रति भक्ति भाव और आस्था को जन्म मिलता है और पारस्परिक निर्भरता, सहयोग और एकता के बंधन मजबूत होते हैं।
- सामाजिक विकास की प्रक्रिया व्यक्ति को सामाजिक मान्यताओं रीति रिवाजों और परंपराओं के अनुकूल आचरण करने में पूरी-पूरी सहायता करती है। इस तरह से उसे अपने सामाजिक परिवेश में परिवेश में ठीक प्रकार से समायोजित होने में समर्थ करती है।

4.1.1. सामाजिक रचनावाद – समाज से प्राप्त होने वाला वह ज्ञान जो संस्कृति और संदर्भ को महत्व देता है सामाजिक रचनावाद कहलाता है। (Derry 1999,McMahon 1997) वास्तव में विभिन्न प्रकार का ज्ञानात्मक रचनावाद ही सामाजिक रचनावाद कहलाता है। जो सहभागिता से सीखने पर बल देता है। सामाजिक रचनावाद समसामयिक सिद्धान्तों से गहराई से जुड़ा होता है। विशेषकर वायगाट्सकी और ब्रुनर के विकास के सिद्धान्त तथा बंडूरा के सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धान्त के अनुसार। (Shunk 2000)

नये ज्ञान को आत्मसात करना ,समायोजित करना किसी अधिगमकर्ता के लिए इतना भी आसान नहीं होता है। यह समाज के साथ ज्ञान को सम्मिलित करने की प्रक्रिया है।(वायगोत्सकी1978)

वायगोत्सकी का सामाजिक रचनावादी दृष्टिकोण (Constructivist view of Learning)–

वायगोत्सकी का मानना है कि, संज्ञानात्मक विकास संस्कृति से आता है।

1 वायगोत्सकी संज्ञानात्मक विकास के लिए सामाजिक कारको को महत्वपूर्ण मानते हैं।

2 वायगोत्सकी मानते हैं कि संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक अंतर्क्रियाओ जो जोन आफ प्राक्सीमल डेवलपमेंट के लिए निर्देशित होती है जिसमें बच्चों और उनके अभिभावक साथ मिलकर ज्ञान का सृजन करते हैं।

3 सीखने में महत्वपूर्ण कारक पर्यावरण होता है क्योंकि पर्यावरण में रहते हुए बच्चा सोचता है प्रतिक्रिया करता है और सीखता है।

4 वायगोत्सकी ने बच्चे के संज्ञानात्मक विकास में भाषा की भूमिका पर भी महत्व दिया है। अच्छी भाषा संज्ञानात्मक विकास को अच्छी तरह से विकसित करती है।

5 विचार और भाषा जीवन के प्रारंभिक दिनों में अलग हो सकती है किन्तु 3 वर्ष के बाद इसका विलय होकर मौखिक विचार तैयार होने लगते हैं।

6 वायगोत्सकी के अनुसार प्रौढ संज्ञानात्मक विकास के प्रमुख संसाधन होते हैं। प्रौढ अपने संस्कृति को बौद्धिक अनुकूलन के द्वारा बच्चों में भलीभांति स्थानांतरित करते हैं।

अपना ज्ञान परखिए–

प्रश्न 1– सामाजिक विकास से क्या आशय है?

.....

.....

.....

प्रश्न 2– सामाजिक रचनावाद से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

4.1.2. सामाजिक रचनावाद की धारणाएं– सामाजिक रचनावाद विशेष धारणाओ पर आधारित है, जिसमें सीखना और वास्तविक ज्ञान शामिल होता है। जो हम पहले से जानते हैं उसके संदर्भ में दिए गए

निर्देश को समझना, समझकर लागू करना सामाजिक रचनावाद के परिप्रेक्ष्य में ज्यादा महत्वपूर्ण है। इसमें निम्नानुसार धारणाएं हैं—

- 1 वास्तविकता (Reality)— सामाजिक रचनावाद की यह धारणा है कि, वास्तविक ज्ञान मानवीय क्रियाओं द्वारा सृजित होता है।
- 2 ज्ञान (Knowledge)— सामाजिक रचनावाद के अनुसार ज्ञान मानवीय उत्पाद है, जो सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से सृजित होता है (Emest 1999, Gredler 1997, Pratt & Floden 1994) जब कोई अधिगमकर्ता किसी के साथ या पर्यावरण के साथ अंतर्क्रिया करता है तभी वह व्यक्तिगत रूप से सीखे गए ज्ञान का अर्थ निकाल पाता है।
- 3 अधिगम (Learning)— सामाजिक रचनावाद की धारणा है कि सीखना एक सामाजिक प्रक्रिया है न तो यह अकेले में हो सकती है न ही समाज के साथ निष्क्रिय व्यवहार करने से सीखना संभव होगा। सीखने के लिए बाह्य दबाव या प्रेरण की आवश्यकता होती है। (McMahon 1997) अर्थपूर्ण सीखने के लिए अधिगमकर्ता को सामाजिक क्रियाओं में व्यस्त रहना आवश्यक है।
- 4 प्रौढ़ बालक को अपनी संस्कृति से परिचित कराते हैं व्याख्या करते हैं संसार के लिए अपनी प्रतिक्रिया देते हैं।

गतिविधि—

सामग्री—स्कूटर, कार, सायकिल हवाई जहाज आदि के चित्र तथा संबंधित चित्रों के आउट लाइन विधि—यातायात का आशय शिक्षक द्वारा बताया जाएगा। चित्रों की सहायता से विभिन्न प्रकार के यातायात के साधन और प्रयोग की व्याख्या की जाएगी।

- 5 बालक में जीवन के पहले कुछ वर्षों में बोलना और भाषा व्यक्तिगत रूप से विकसित होती है।
- 6 सामाजिक क्रियाकलाप से जटिल मानसिक प्रक्रियाएँ शुरू होती हैं।

उदाहरण—पिता या शिक्षक बालक को विभिन्न प्रकार के वाहनो को दिखाकर उनके कार्य और स्थान के आधार पर वर्गीकृत करने को कहेंगे। आधार बदल बदल कर सीखने की प्रक्रिया को जटिल बनाया जा सकता है।

- 7 बालक और अधिक चुनौतीपूर्ण कार्य को निष्पादित कर सकते हैं यदि उन्हें अधिक कुशल और दक्ष व्यक्ति सहायता करें।
- 8 चुनौतीपूर्ण लक्ष्य अधिकतम संज्ञानात्मक वृद्धि को प्रोत्साहित करते हैं।
- 9 खेल से बालक में ज्ञान का विस्तार होता है।

4.1.3. सामाजिक संदर्भ में सीखना—दो तरह के सामाजिक संदर्भ होते हैं जिसमें सीखने की प्रक्रिया होती है।

- प्रकृति से प्रभावित होकर सीखना
- सीखे हुए ज्ञान का विस्तार करने के लिए सीखना।

अधिगमकर्ता अपनी विशेष संस्कृति से आनुवांशिक रूप से सीखता है। उदाहरण के लिए भाषा को संकेत से, तर्क से, अधिगमकर्ता पूरी उम्र सीखता है। संकेत बताते हैं कि क्या और कैसे सीखा? अधिगमकर्ता ने क्या और कैसे सीखा यह सीखने की प्रकृति और समाज के ज्ञानवान सदस्यों पर निर्भर करता है। समाज के साथ अंतर्क्रिया किए बिना ज्ञान का सामाजिक अर्थ निकालना संभव नहीं है। सामाजिक तंत्र के निर्देशों के उपयोग से ही ज्ञान का उपयोग हो सकता है। छोटे बच्चों, बड़ों से अंतर्क्रिया करते हुए सोचने की क्षमता का विकास करते हैं।

बच्चा अपने आसपास के वातावरण से, प्रकृति से हमेशा ही सीखता है। सीखे हुए ज्ञान को अपने अभिभावकों से, शिक्षकों से, साथियों से, अपनी जिज्ञासा को प्रश्न के रूप में रखता है। प्रश्नों के उत्तर के साथ बच्चा अपने ज्ञान को और विकसित करते हुए समझ बनाता है स्वयं के चिन्तन से ज्ञान का सृजन करता है।

उदाहरण के लिए

- प्रकृति से प्रभावित होकर सीखना— उदाहरण के लिए बालक पक्षियों को उड़ते हुए देखता है कुत्ते बिल्ली को चलते हुए देखता है। वह स्वयं उड़ना चाहता है पर उड़ नहीं पाता। प्रकृति से उसने सीखा कि, कुछ जीव उड़ सकते हैं कुछ नहीं। वह अपनी जिज्ञासा / प्रश्न बड़ों के समक्ष रखता है कि सभी जीव क्यों नहीं उड़ सकते? बालक को बताया जाता है कि, जिनके पास पंख होते हैं वे ही जीव उड़ सकते हैं।
- सीखे हुए ज्ञान का विस्तार करना— उड़ने वाले और उड़ ना सकने वाले जीव के अन्य गुणों के बारे में बालक ज्ञान प्राप्त करते हुए अपने ज्ञान का विस्तार करता है।

अपना ज्ञान परखिए—

प्रश्न—सामाजिक रचनावाद किन धारणाओं पर आधारित है?

.....

.....

.....

प्रश्न— सामाजिक संदर्भ में सीखने से क्या आशय है?

.....

.....

.....

4.2. सामाजिक रचनावाद से संबंधित सिद्धान्त

लिव सिमनोविच बाइगोत्सकी 1896–1934 का सामाजिक दृष्टिकोण संज्ञानात्मक विकास का एक प्रगतिशील विश्लेषण है। बाइगोत्सकी ने समाज एवं सांस्कृतिक संबंधों में संवाद से बालक का संज्ञानात्मक विकास होता है। पियाजे की तरह ही बाइगोत्सकी का भी मानना है कि बच्चे ज्ञान का निर्माण स्वयं करते हैं। लेकिन बाइगोत्सकी के अनुसार संज्ञानात्मक विकास अकेले संभव नहीं है वह भाषा विकास, सामाजिक विकास, शारीरिक विकास के साथ-साथ होता है और यह किसी सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ में होता है।

4.2.1. सिद्धान्त – (Vygatsky’Theory)—वायगाट्सकी एक रूसी मनोवैज्ञानिक थे जिन्होंने सामाजिक रचनावाद के संबंध में अपने विचार दिए। वायगाट्सकी के अनुसार बच्चों में समाज से स्वाभाविक रूप से सीखने की प्रकृति होती है। अधिगमकर्ता और शिक्षक के मध्य अंतर्क्रिया सीखने में शामिल होती है। सीखने की इस प्रक्रिया के दौरान निकाले गये अर्थ को अधिगमकर्ता साथियों के साथ साझा करते हैं, परीक्षण करते हैं, इस तरह नई समझ विकसित होती है। सामाजिक रचनावाद में समाज के साथ अंतर्क्रिया महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह सोचने की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करता है जिससे वे अपने विचार को दूसरे के विचार के साथ तुलना कर सकते हैं। उदाहरण के लिए समस्या समाधान विधि में जब एक छात्र दूसरे छात्र के साथ अंतर्क्रिया करते हैं तब वे अपने ज्ञान को बांटते हुए यह जानते हैं कि उनको कितना आता है और साथी क्या जानते हैं। समस्या के हल के लिए बहस करते हुए कारण जानते हैं, और निष्कर्ष पर पहुंचते हैं। इस तरह सामाजिक रचनावाद में अंतर्क्रिया, विचार करना, समझ को तुलना करते हुए और अधिक स्पष्ट करना शामिल है।

वाइगोत्सकी के अनुसार भाषा संज्ञानात्मक विकास का प्रमुख उपकरण है। बच्चा अपनी बाल्यावस्था से ही कार्यों को करने, समस्या समाधान के लिये भाषा को उपकरण के रूप में उपयोग करता है।

वाइगोत्सकी के अनुसार सामाजिक एवं सांस्कृतिक संबंधों से ही संज्ञानात्मक कौशल का विकास होता है। वायगोत्सकी के अनुसार अधिगम व विकास सांस्कृतिक व सामाजिक वातावरण के मध्य साथ-साथ चलते हैं। उनका कहना है कि बालक का विकास सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों से अलग नहीं किया जा सकता।

— वायगोत्सकी के अनुसार अधिगम पहले बच्चे तथा वयस्क के बीच होती है बाद में बच्चे में स्मृति, ध्यान, तर्कशक्ति का विकास होता है समाज में रहते हुये खोज करते हुये सीखते हैं। इसे एक उदाहरण से समझ सकते हैं।

- बच्चे को किसी बड़े व्यक्ति द्वारा गिनना हाथ की अंगुलियों से सिखाया गया, बच्चा भी अंकों को अंगुलियों पर गिनने लगता है। यदि पंक्तियाँ खींचकर सिखाया जाता तो बच्चा पंक्ति से गिनना सीखता।
- सिद्धांत के अनुसार ज्ञान बाह्य वातावरण में मौजूद होता है जो सीखने में सहायक होता है अर्थात् ज्ञान विभिन्न व्यक्तियों, भिन्न-भिन्न वातावरण (जैसे वस्तुएं, जंगल पहाड़, नदी, संस्कृति, किताबें, कम्प्यूटर) में होता है।

इस सिद्धांत के अनुसार संज्ञानात्मक विकास की प्रकृति सामाजिक है “हमारे स्वयं का विकास दूसरों के द्वारा होता है”

अतः वायगोत्सकी के अनुसार सभी मानसिक या बौद्धिक क्रियाएँ समाज में घटती हैं जिसे बालक देखता है समझता है समुदाय के साथ अंतर्क्रिया करता है उसके सीखने पर समाज के विचार व्यवहार का प्रभाव पड़ता है। इसी कारण वायगोत्सकी ने सामाजिक वातावरण के विभिन्न पक्षों जैसे— परिवार, समुदाय, मित्र, विद्यालय की बच्चों के विकास में भूमिका पर बल दिया है।

A संभावित विकास का क्षेत्र (Zone of Proximal Development)—

बालक ज्ञान किसी के सहायता से निष्पादित करता है या अधिक कुशल अपने साथी की सहायता से निष्पादित करता है। इसके मध्य जो अंतर होता है वह विकास का संभावित क्षेत्र होता है ऐसी अवधारणा वायगोत्सकी द्वारा की गई है। इसी बात को इस तरह भी समझा जा सकता है कि “ बालक जो कर रहा है तथा जो करने की क्षमता रखता है उसके बीच के क्षेत्र को संभावित विकास क्षेत्र **ZPD** कहा जाता है। वायगोत्सकी ने सामाजिक प्रभाव मुख्यतः निर्देशन (बालक के ज्ञान को बढ़ाने हेतु) हेतु **ZPD** के अवधारणा का प्रयोग किया है।

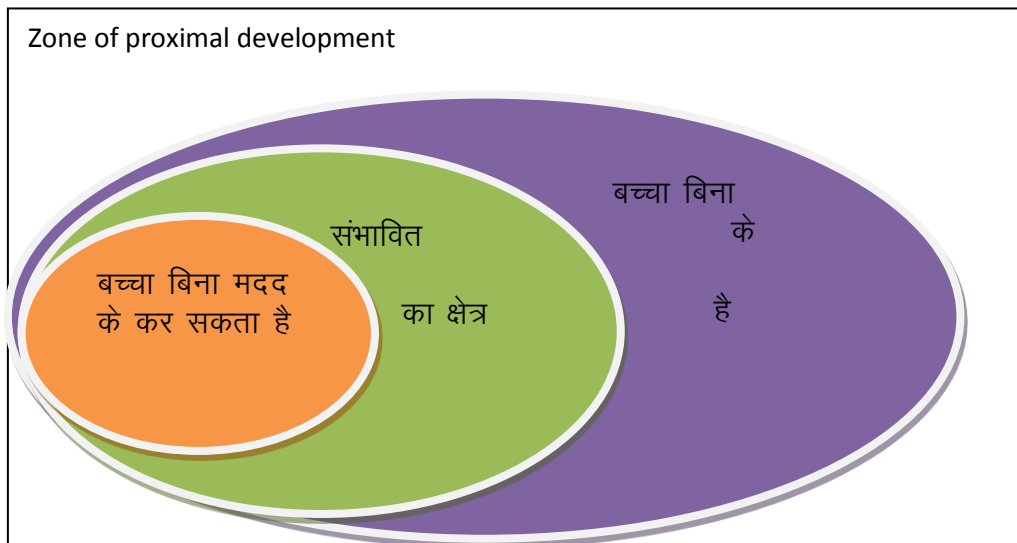
उदा०— दो बच्चों की बुद्धि लब्धि का परीक्षण किया गया उनकी मानसिक आयु 8 वर्ष आंकी गई। इसके बाद उनकी उम्र से बड़े बच्चों की समस्या उन्हें हल करने दी गई। देखा गया कि एक बच्चे ने 12 वर्ष के बच्चे के लिए तैयार की समस्या को हल किया तथा दूसरे बच्चे ने 9 वर्ष के बच्चों के लिये बनाई गई समस्या को हल किया अर्थात् 8 वर्ष एवं 12 वर्ष के मध्य का अंतर विकास का संभावित क्षेत्र पहले बालक के लिये तथा दूसरे के लिये 8 वर्ष से 9 वर्ष का अंतर ZPD है यह ZPD प्रारंभिक दौर में शिक्षकों के रूप से की गई बाद में बच्चे स्वयं करने लगते हैं। अर्थात् 8 वर्ष के बच्चों में 12 वर्ष के बच्चे के लायक क्षमता हो सकती है।

संभावित विकास का स्तर को इस तरह से और समझ सकते हैं—

स्तर 1—वर्तमान विकास का स्तर—यह बताता है कि बालक में बिना किसी मदद की कितनी क्षमता है।

स्तर 2—संभावित विकास का स्तर—यह बताता है कि बालक को जब किसी अन्य व्यक्ति या शिक्षक की सहायता से क्षमता में कितनी वृद्धि हो सकती है।

स्तर 1 एवं 2 के मध्य के अंतर को वायगोत्सकी ने संभावित विकास का स्तर (ZPD) कहा है। उनका विश्वास था कि बालक विकास के सामान्य स्तर पर है यदि उसे कुशल व्यक्तिकी मदद दी जाये तो उसे संभावित स्तर पर ले जाया जा सकता है। नीचे दर्शाए गए चित्र की सहायता से इसे आसानी से समझा जा सकता है।



शिक्षक कक्षा में निम्नलिखित गतिविधि करा सकते हैं—

- बालक को दिए जाने वाले लक्ष्य/कार्य का कठिनाई स्तर अधिक रखना।
- दिए जाने वाले कार्य चुनौती पूर्ण हो किन्तु बहुत कठिन न हो।
- भिन्न-भिन्न तरह के अनुभव प्राप्त करने के अवसर प्रदान करना।

B – स्केफोल्डिंग (Scaffolding)

ZPD संभावित विकास के क्षेत्र की पहली एवं दूसरी अवधारणा स्केफोल्डिंग है। स्केफोल्डिंग एक तकनीक है, इसमें सहायककर्त्ता बालक की सहायता करते हैं और यह सहायता का स्तर धीरे-धीरे कम

होते जाते हैं धीरे बच्चे को मदद की आवश्यकता कम होती है क्योंकि बच्चों की क्षमता बढ़ने लगती है।

वायगोत्सकी के अनुसार—स्केफोडिंग का महत्वपूर्ण उपकरण बच्चों के साथ संवाद स्थापित करना है। बालकों की अवधारणा अव्यवस्थित तथा असंगठित होती है उसे व्यवस्थित और संगठित अवधारणा में बदलने के लिए कुशल व्यक्ति की सहायता की आवश्यकता होती है कुशल सहायक के साथ संवाद के परिणाम स्वरूप बच्चे के विचार व्यापक, क्रमबद्ध, संगठित तर्कसंगत, औचित्यपूर्ण होने लगते हैं।

स्केफोडिंग(Scaffolding)की प्रक्रिया चार चरणों में पूर्ण होती है जो निम्नानुसार हैं—

- **अधिक जानकार से सीखना**— पहले चरण में बालक को अधिक जानकार व्यक्ति के या हम उम्र से सीधे सीखने के अवसर दिए जाते हैं। बालक के साथ अधिक जानकार व्यक्ति कार्य करते हुए बालक को खोज करने में तथा प्रश्न का विश्लेषण करने में मदद करते हैं। बालक अपनी क्षमताओं के आधार पर खोज एवं विश्लेषण करते हैं और जहां कठिनाई हो वहां मदद लेते हैं। इस चरण में अधिक समय लगता है। शिक्षक को चाहिए कि, वे बालक के साथ धैर्य पूर्वक व्यवहार करें बालक को जहां आवश्यकता हो वहां केवल हल्का सा इशारा करें जो उसे आगे बढ़ने में सहायता प्रदान करें।
- **स्वयं की मदद से सीखना**— जिन प्रश्नों को बालक ने अधिक जानकार व्यक्ति की मदद से सीखा था इस चरण में उस प्रश्न या कार्य को बालक स्वयं करने की कोशिश करता है।
- **कार्य का सहजता से करना**— इस चरण में बालक पूर्णतः अपने कार्य को स्वयं करने योग्य बन जाता है, प्रश्नों को हल करने की पद्धति जान जाता है।
- इस चरण में बालक सीखी गई प्रक्रिया का उपयोग बार-बार अन्य गतिविधियों के लिए करता है एक तरह से बालक सीखे गए कार्य में दक्ष हो जाता है इस चरण में आते-आते बालक का विशिष्ट क्षेत्र में लगभग विकास भी पूर्ण होकर सीखने के अन्य क्षेत्र खुलने लगते हैं साथ ही पेचीदा प्रश्न भी इसी चरण में हल किए जाने लगते हैं। उपरोक्त पूरी प्रक्रिया जो पेचीदा प्रश्न हल करने तक होती है ढांचा निर्माण कहलाती है।

जैसे —जैसे बच्चे बड़े होते जाते हैं बड़ों से मदद लेने का तरीका व प्रकृति बदल जाती है।

उदा० — जब बच्चा चलना शुरू करता है वह दोनों हाथों को टेककर चलता है। अभिभावक उसे हाथों से सहारा देकर बच्चे को खड़ा करते हैं धीरे-धीरे बच्चा खड़े होना सीखता है। जहां आवश्यकता होती है वही बच्चों की मदद की जाती है। मदद बीच में ही छोड़ देते हैं तब वह चलता है। चलना सीखते-सीखते बच्चा दौड़ना भी सीख जाता है।

शिक्षक कक्षा में निम्नलिखित गतिविधि करा सकते हैं—

- कार्य के निष्पादन में बालक की मदद करना।
- अधिक जानकारी वाले व्यक्ति/शिक्षक/साथी से बालक को सहयोग देना।
- चरणबद्ध तरीके से ज्ञान प्राप्त कराने में सहयोग करना।
- बालक में संभावित विकास स्तर को पहचानना और वहां पहुंचाने के प्रयास करना। (जैसे—मॉडलिंग, प्रश्नों के माध्यम से, जाँच पड़ताल से, समस्या को छोटे-छोटे भागों में तोड़कर)। प्रारंभ में अच्छी तरह से बालक की मदद करना किन्तु धीरे-धीरे बालक पर जिम्मेदारी डालना।

C – भाषा और विचार :-


वायगोत्सकी के अनुसार भाषा का विकास सामाजिक पारस्परिक क्रिया के द्वारा संप्रेषण से होता है। भाषा एक महत्वपूर्ण उपकरण है। भाषा केवल समाज में संप्रेषण के लिये ही नहीं है अपितु अपने आप

को निर्देशित करने के लिये भी भाषा का प्रयोग होता है, भाषा से अपना व्यवहार प्रदर्शित करते हैं, मूल्यांकन करने के लिये भाषा का प्रयोग सामाजिक रचनावाद में होता है। वायगोत्सकी (1962) संज्ञानात्मक विकास के लिए भाषा की भूमिका बताई है।

1. बड़े अपनी जानकारी भाषा के द्वारा बच्चों को देते हैं।
2. भाषा एक बहुत ही शक्तिशाली उपकरण है जो पारस्परिक अनुकूलन के लिए आवश्यक है।
3. बाल्यावस्था में यह भाषा बालक के विचारों का एक महत्वपूर्ण साधन है।

बच्चों को भाषा सिखाने के निम्नलिखित साधन हो सकते हैं—अनुकरण, खेल, कहानी सुनना, वार्तालाप या बातचीत, प्रश्नोत्तर ।

D— अधिक ज्ञानवान (More Knowledgeable Other) से सीखना—बालक को उससे अधिक ज्ञान वाले व्यक्ति के संपर्क में अधिक से अधिक रखना जिससे बालक अपने अधिकतम विकास को प्राप्त कर सके।

More Knowledgeable Other +  = higher Learning

शिक्षक कक्षा में निम्नलिखित गतिविधि करा सकते हैं—

- बालको को अधिक से अधिक शिक्षक के साथ, अधिक कुशल साथी के साथ सीखने के अवसर प्रदान करना।
- बालको के समूह बदलते रहना।
- समूह में सदस्य अलग-अलग क्षमता वाले हो।

अपना ज्ञान परखिए—

प्रश्न—सामाजिक रचनावाद के प्रमुख रचनावादी दर्शनशास्त्री कौन हैं?

.....

.....

.....

प्रश्न वायगोत्सकी ने सामाजिक वातावरण में विभिन्न पक्षी जैसे— परिवार, समुदाय, मित्र, विद्यालय की बच्चों के विकास में भूमिका पर क्यों बल दिया है।

.....

.....

प्रश्न—संभावित विकास का क्षेत्र (ZPD) से क्या आशय है?

.....

.....

.....

प्रश्न3—स्केफोडिंग (Scaffolding) की प्रक्रिया कितने चरणों में पूर्ण होती है?

.....

.....

.....

प्रश्न4— वर्तमान विकास का स्तर से क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

4.2.3. सामाजिक सांस्कृतिक सिद्धांत—

- बालक के विकास में अभिभावक ,शिक्षक ,साथी, और समाज सभी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
- प्रौढ़,समाज के मूल्य और कौशलो को अगली पीढ़ी को सौंपते है।
- भविष्य के विकास को आकार देते है।

4.2.4. कक्षा में सामाजिक रचनावाद हेतु सुझावात्मक गतिविधियां—

- पठन पाठन से संबंधित गतिविधियां
- समग्र भाषा सिखाने पर बल
- परिस्थितियों से सीखना
- सहयोगी से सीखना
- खेल, प्रेरण, समस्या समाधान

4.3. शैक्षिक निहितार्थ

4.3.1. शिक्षक की भूमिका—

—सामाजिक रचनावाद में शिक्षक की भूमिका अपनी बुद्धिमानी दिखाने के बजाय बच्चों के मार्गदर्शक के रूप में है। छात्रों को सही ज्ञान और समझ विकसित करने के लिए अवसर प्रदान करने में शिक्षक का महत्वपूर्ण योगदान होना चाहिए।

1 जांच से संबंधित गतिविधियां करवाना जिससे अधिकमकर्ता जांच की प्रक्रिया से ज्ञान का सृजन कर सकते है।

2 खोज करने के अवसर प्रदान करना क्योंकि खोज आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराने में सुविधा प्रदान करता है।

3 ज्ञान सक्रिय रहकर सृजित होता है अतः छात्रों को सक्रिय बनाए रखना आवश्यक है।

4 नये और पुराने ज्ञान के समायोजन में सामाजिक रचनावाद सहायता प्रदान करता है अतः छात्रों को लगातार ऐसे अवसर प्रदान करना चाहिए।

5 सीखना लचीली प्रक्रिया है इसलिए छात्रों को उनकी जांच या सूचना के आधार पर सीखने की छूट देना चाहिए।

6 समाज से संबंधित विषयों पर व्याख्या करने के अधिकतम अवसर देना जिससे उनमें व्याख्या करने की प्रवृत्ति विकसित होगी और छात्र सूचनाओं को अलग-अलग तरह से व्याख्या कर पाते है।

7 भयमुक्त कक्षा का वातावरण या परिस्थितियों का निर्माण करना जिसमें बच्चें प्रश्न करने में सुरक्षित अनुभव करें।

8 संदर्भित सीखने के लिए प्रामाणिक कार्य बच्चों को दिए जाने चाहिए।

9 ज्ञान सृजन में सहभागिता को प्रोत्साहित करना न कि प्रतियोगिता को।

10 मिश्रित समूह में सीखने को बढ़ावा देना जिसमें अधिक जानकार व कम जानकार बच्चे हो सकते हैं।

11 बच्चों की तर्क शक्ति को समझना।

12 बच्चों की रचनात्मकता को सुविधा प्रदान करना।

13 बच्चों के आपसी सहयोग भावना को गति प्रदान करना।

14 बच्चों में भावना के निर्माण को संतुलित करने को प्रोत्साहित करना।

15 बच्चे में एक दूसरे के प्रति आपसी समझ के निर्माण को प्रोत्साहित करना।

16 नैतिक मूल्य के सृजन को प्रोत्साहित करना।

अपना ज्ञान परखिए—

प्रश्न—1 कक्षा में बच्चों को सक्रिय रखना क्यों आवश्यक है?

.....

.....

प्रश्न—2 मिश्रित समूह में बच्चें कैसे सीखते हैं?

.....

.....

4.3.2. अधिगमकर्त्ता की भूमिका—

सामाजिक रचनावाद में यह अपेक्षा है कि छात्र अधिक से अधिक सामाजिक गतिविधियों में भाग लें और सीखने के लिए अधिकतम जिम्मेदारी लें।

1 अधिगमकर्त्ता सीखने की प्रक्रिया में सक्रियता से भाग लें।

2 अपने वर्तमान की समझ के अनुसार नई जानकारी को आत्मसात एवं समायोजन करें।

3 सीखना उद्देश्य पूर्ण होना चाहिए जो अनुभव में दिखाई दे।

4 पूर्वधारित ज्ञान को नये ज्ञान से जोड़ने का सतत् प्रयास करना।

5 पूर्व स्थापित स्कीमा / विचार को नये विचार से स्वीकारने को तैयार होना चाहिए।

6 अधिगमकर्ता को अपने आयडिया का उपयोग करना, परीक्षण करना कौशल विकसित करना चाहिए इसके लिए उचित गतिविधि में भाग लेना होगा।

7 अधिगमकर्ता के लिए आवश्यक है कि, यह जाने कि वे कैसे सीख रहे हैं या उनकी सोच कैसे बदल रही है या सीखने का क्या तरीका है।

8 चूंकि ज्ञान समाज आधारित होता है और छात्र विभिन्न संप्रदाय से आते हैं अतः ज्ञान संप्रदाय से जुड़कर सीख सकते हैं।

9 ज्ञान के सृजन के लिए अलग-अलग नजरिए से चीजों को देखने की आवश्यकता होती है, अतः वृहद् नजरिए की आवश्यकता होगी।

सीखने में जीवंतता, सक्रियता बनाए रखना चाहिए।

अपना ज्ञान परखिए—

प्रश्न-1 सामाजिक रचनावाद में बच्चों को समाज के मध्य अंतर्क्रिया करने हेतु क्यों कहा जाता है?

.....

.....

.....

प्रश्न-2 ज्ञान समाज आधारित होता है इसका क्या आशय है?

.....

.....

.....

.....

.....

इकाई सारांश—

- सामाजिक विकास सीखने की वह प्रक्रिया है जो समूह के स्तर परंपराओं तथा रीति-रिवाजों के अनुकूल अपने आप को ढालना तथा एकता, मेल-जोल और सहयोग की भावना भरने में सहायक होती है।
- सामाजिक रचनावाद—समाज से प्राप्त होने वाला वह ज्ञान जो संस्कृति और संदर्भ को महत्व देता है सामाजिक रचनावाद कहलाता है।
- वायगोत्सकी का मानना है कि, संज्ञानात्मक विकास संस्कृति से आता है।
- वायगोत्सकी मानते हैं कि संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक अंतर्क्रियाओं जो जोन आफ प्राक्सीमल डेवलपमेंट के लिए निर्देशित होती हैं जिसमें बच्चों और उनके अभिभावक साथ मिलकर ज्ञान का सृजन करते हैं।
- सीखने में महत्वपूर्ण कारक पर्यावरण होता है क्योंकि पर्यावरण में रहते हुए बच्चा सोचता है प्रतिक्रिया करता है और सीखता है।
- सामाजिक रचनावाद के सिद्धांत में संभावित विकास का क्षेत्र, स्केफोल्डिंग, संस्कृति और भाषा आती है।

- कुछ कार्य करने की क्षमता बालक में होती है उस कार्य को करने में बालक को किसी के मदद की आवश्यकता नहीं होती है किन्तु उसके आगे के कार्य को करने में वह बालक सक्षम नहीं होता है यदि कोई मदद करें तो वह बालक उस कार्य को कर सकता है। दोनों के अंतर को संभावित विकास के क्षेत्र कहते हैं।
- स्केफोडिंग एक तकनीक है, इसमें सहायककर्त्ता बालक की सहायता करते हैं और यह सहायता का स्तर धीरे कम होते जाते हैं धीरे बच्चे को मदद की आवश्यकता कम होती है क्योंकि बच्चों की क्षमता बढ़ने लगती है।
- भाषा का विकास सामाजिक पारस्परिक क्रिया के द्वारा संप्रेषण के उद्देश्य से होता है।
- सामाजिक रचनावाद में भाषा की भूमिका महत्वपूर्ण है। बड़े अपनी जानकारी भाषा के द्वारा बच्चों को देते हैं। भाषा एक बहुत ही शक्तिशाली उपकरण है जो पारस्परिक अनुकूलन के लिए आवश्यक है। बाल्यावस्था में यह भाषा बालक के विचारों का एक महत्वपूर्ण साधन है।
- कक्षा में सामाजिक रचनावाद हेतु निम्नलिखित गतिविधियाँ की जा सकती हैं। पठन पाठन से संबंधित गतिविधियाँ, समग्र भाषा सिखाने पर बल, परिस्थितियों से सीखना, सहयोगी से सीखना, खेल, प्रेरण, समस्या समाधान।
- सामाजिक रचनावाद में शिक्षक की भूमिका बच्चों के मार्गदर्शक के रूप में है। छात्रों को सही ज्ञान और समझ विकसित करने के लिए अवसर प्रदान करने में शिक्षक का महत्वपूर्ण योगदान होना चाहिए। अधिक से अधिक सामाजिक अंतर्क्रिया में बच्चें भाग ले इसके लिए शिक्षक को लगातार प्रयास करना चाहिए।
- सामाजिक रचनावाद में छात्र अधिक से अधिक सामाजिक गतिविधियों में भाग लें और सीखने के लिए अधिकतम जिम्मेदारी लें।

बोध प्रश्नों के उत्तर—

अपना ज्ञान परखिए—

प्रश्न 1—सामाजिक विकास से क्या आशय है?

उत्तर— सामाजिक विकास से हमारा तात्पर्य अपने साथ और दूसरों के साथ भली-भाँति समायोजन करने की बढ़ती योग्यता बढ़ना है। सामाजिक विकास सीखने की वह प्रक्रिया है जो समूह के स्तर परंपराओं तथा रीति-रिवाजों के अनुकूल अपने आप को ढालना तथा एकता, मेलजोल और सहयोग की भावना भरने में सहायक होती है। यह विकास समाज की संस्कृति से आता है। भाषा की भूमिका भी बहुत महत्वपूर्ण है। भाषा संप्रेषण के लिए, सीखने के लिए आवश्यक है।

प्रश्न 2—सामाजिक रचनावाद से आप क्या समझते हैं?

उत्तर— समाज से प्राप्त होने वाला वह ज्ञान जो संस्कृति और संदर्भ को महत्व देता है सामाजिक रचनावाद कहलाता है। (Derry 1999, McMahon 1997) वास्तव में विभिन्न प्रकार का ज्ञानात्मक रचनावाद ही सामाजिक रचनावाद कहलाता है।

प्रश्न 3— सामाजिक रचनावाद किन धारणाओं पर आधारित है?

उत्तर— सामाजिक रचनावाद निम्नलिखित धारणाओं पर आधारित है,— वास्तविकता (Reality),

2 ज्ञान (Knowledge), अधिगम (Learning), संस्कृति से परिचित, में बोलना और भाषा

सामाजिक क्रियाकलाप से जटिल मानसिक प्रक्रियाएँ शुरू होती हैं।

प्रश्न4— सामाजिक संदर्भ में सीखने से क्या आशय है?

उत्तर—सामाजिक संदर्भ में सीखने के अंतर्गत बालक प्रकृति से सीखता है और सीखे हुए ज्ञान का विस्तार समाज की मदद से करता है?

प्रश्न 5 —सामाजिक रचनावाद के प्रमुख रचनावादी दर्शनशास्त्री कौन हैं?

उत्तर—सामाजिक रचनावाद के प्रमुख रचनावादी दर्शनशास्त्री लिव वायगोत्सकी हैं?

प्रश्न6—वायगोत्सकी ने सामाजिक वातावरण में विभिन्न पक्षी जैसे— परिवार, समुदाय, मित्र, विद्यालय की बच्चों के विकास में भूमिका पर क्यों बल दिया है।

उत्तर—सभी मानसिक या बौद्धिक क्रियाएँ समाज में घटती हैं जिसे बालक देखता है समझता है समुदाय के साथ अंतर्क्रिया करता है उसके सीखने पर समाज के विचार व्यवहार का प्रभाव पड़ता है। इसी कारण वायगोत्सकी ने सामाजिक वातावरण के विभिन्न पक्षी जैसे— परिवार, समुदाय, मित्र, विद्यालय की बच्चों के विकास में भूमिका पर बल दिया है।

प्रश्न7— संभावित विकास का क्षेत्र (ZPD) से क्या आशय है?

उत्तर— कुछ कार्य बच्चों अपनी क्षमता से कर पाते हैं लेकिन आगे का कार्य वे किसी की मदद से ही कर पाते हैं यह वह क्षेत्र होता है जहाँ संभावित विकास हो सकता है इसे संभावित विकास का क्षेत्र (ZPD) कहते हैं। उदाहरण के लिए बालक जोड़ कर लेते हैं किन्तु जब उसे हासिल के अंक के साथ जोड़ने को दिया जाता है तब वह बालक जोड़ नहीं पाता है किन्तु यदि शिक्षक कुछ मदद करे तो बालक हासिल के अंको को जोड़ लेता है।

प्रश्न8—स्केफोडिंग (Scaffolding) की प्रक्रिया कितने चरणों में पूर्ण होती है?

उत्तर— स्केफोडिंग की प्रक्रिया चार चरणों में पूर्ण होती है?

1. अधिक जानकारी से सीखना—
2. स्वयं की मदद से सीखना—
3. कार्य का सहजता से करना
4. सीखी गई प्रक्रिया का उपयोग बार—बार

प्रश्न9—वर्तमान विकास का क्षेत्र से क्या समझते हैं?

उत्तर—बालक को बिना किसी मदद के जो करना आता है उसे वर्तमान विकास का क्षेत्र कहते हैं।

4.4.वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1—सामाजिक रचनावाद देने वाले मनोवैज्ञानिक हैं—

A ब्रुनर

C जीन पियाजे

B वायगोत्सकी

D स्केनर

प्रश्न 2—सामाजिक रचनावाद के प्रमुख सिद्धान्त—

A संभावित विकास का क्षेत्र

C स्केफोल्डिंग

लघुउत्तरीय प्रश्न—

प्रश्न 1— सॉरेन्सन द्वारा दी गई सामाजिक रचनावाद की परिभाषा दीजिए?

प्रश्न 2— संज्ञानात्मक विकास के लिए भाषा की भूमिका बताइए?

प्रश्न 3— अधिगमकर्त्ता को अधिक से अधिक सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने क्यों कहा गया है?

4.4. अभ्यास प्रश्न—

प्रश्न 1—सामाजिक रचनावाद से क्या आशय है?

प्रश्न 2—सामाजिक रचनावाद की धारणाओं को विस्तृत रूप से समझाइए?

प्रश्न 3—सीखने के सामाजिक संदर्भ क्या हैं?

प्रश्न 4—वायगोत्सकी के सामाजिक रचनावाद के सिद्धान्त को समझाइए?

प्रश्न 5—संभावित विकास का क्षेत्र से क्या तात्पर्य है? उदाहरणसहित समझाइए?

प्रश्न 6—ढांचा निर्माण(स्केफोल्डिंग) को उदाहरणसहित समझाइए?

प्रश्न 7—सामाजिक रचनावाद के विकास के लिए कक्षा में शिक्षक कौनसी गतिविधियां करा सकते हैं?

प्रश्न 8—सामाजिक रचनावाद में शिक्षक की भूमिका को स्पष्ट करें?

प्रश्न 9—सामाजिक रचनावाद में अधिगमकर्त्ता की भूमिका कैसी होनी चाहिए ?

4.5.संदर्भ ग्रंथ—संदर्भसामग्री —

- 1 Sharma,Santosh (2012) Name of article Constructivism *NCERT (20) Constructivist Approaches to Teaching and Learning.* Handbook for Teachers of Secondary Stage.
2. Journal of Advanced Study in Education (VOLUME 1 NUMBER 1 OCTOBER (2013)
3. Regional institute of education Bhopal-13 *CAPACITY BUILDING OF TEACHER EDUCATORS OF MADHYA PRADESH* (TRAINING PACKAGE,ENGLISH LANGUAGE TEACHING,10-14 JUNE 2013),
4. Module for B.Ed.(Institute of Advance Study in Education,Bhopal)
5. स्कूल में आज तुमने क्या पूछा? (कमला वी.मुकुन्दा)